International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 4, July.-August, 2024, Impact Factor: 8.376

प्रेमचंद की दृष्टि में न्याय की अवधारणा (कहानी 'पंच-परमेश्वर' के संदर्भ में)

वशिष्ठ अशोक कुमार आर. आर.[1], डॉ. भंडारे उद्धव तुकाराम[2]

[1]शोधार्थी, चांगू काना ठाकुर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त), नवीन पनवेल,रायगढ़ महाराष्ट्र- 410 206

[2]शोध निर्देशक, चांगू काना ठाकुर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त), नवीन पनवेल,रायगढ़ महाराष्ट्र- 410 206

शोध-सार

प्रेमचंद ने अपने कथा-साहित्य में ग्राम-जीवन की सरलता, दु:ख और उत्पीड़न को अपना प्रिय विषय बनाया है। प्रेमचंद की कहानी आदर्श की स्थापना से आरंभ हुई और यथार्थ के उल्लेख से होते हुए मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तक जा पहुंची। प्रेमचंद तात्कालिक सामाजिक परिस्थितियों में ग्राम-जीवन में न्याय की आदर्श अवधारणा स्थापित करना चाहते थे और अपनी आरंभिक हिंदी कहानी 'पंच-परमेश्वर' (1916) के माध्यम से उन्होंने ऐसा किया। कहानी में गांव के अलगू चौधरी और जुम्मन आपसी वैमनस्यता जैसी मानवीय बुराइयों के होते हुए भी पंच बनाये जाने पर न्याय के देवता बन जाते हैं और कहानी में अंततः न्याय की जीत होती है। यह कहानी न्याय प्रणाली को दिशा देने वाली कहानी बन जाती है। कहानी में स्थापित हुआ है कि न्याय प्रदान करते समय जाति-धर्म, मित्र-शत्रु, छोटा-बड़ा अथवा गरीब-अमीर का भेद नहीं किया जाता। पंच न्याय दाता के आसन पर बैठकर न्याय का देवता बन जाता है। तब वह किसी प्रकार के स्वार्थ में लिप्त नहीं रहता। यह कहानी पाठकों के समक्ष एक आदर्श अवधारणा प्रस्तुत करती है कि पंच के मुख से निकलने वाली वाणी परमेश्वर की वाणी बन जाती है क्योंकि पंच में परमेश्वर वास करता है।

बीज शब्द : उत्पीड़न, दायित्वबोध, अवधारणा, वैमनस्यता, दायित्वबोध, गुंजायमान, रसातल, भलेमानस, देववाणी, उत्तरदायित्व

प्रस्तावना

कहानी 'पंच-परमेश्वर' में जुम्मन और अलगू चौधरी दो मित्र हैं, परम मित्र। अलगू चौधरी धनवान है और जुम्मन पढ़ा-लिखा। दोनों के बीच गहरा आपसी विश्वास है और लेन-देन का व्यवहार भी। जुम्मन

अपनी खाला की देखभाल ठीक से नहीं करता। बूढ़ी खाला स्वयं को अपमानित और तिरस्कृत महसूस करती है। खाला पंचायत बुलाती है और जुम्मन के गाढ़े मित्र अलगू चौधरी को ही पंच बनाती है। अलगू चौधरी पंच बनकर मित्रता का रिश्ता भूल कर न्याय के देवता बन जाते हैं और जुम्मन तथा खाला के बीच हुआ हिब्बानामा खारिज करने का फैसला सुनाते हैं। दोनों के बीच वैमनस्यता पनपने लगती है। अगली बार अलगू चौधरी का बैल मरने के मामले में जुम्मन शेख पंच बनता है। पंच बनते ही जुम्मन शेख व्यक्ति से परमेश्वर बन जाता है और निष्पक्ष होकर फैसला अलगू चौधरी के पक्ष में सुनाता है। गांव वाले एक सुर में कह उठते हैं 'पंच परमेश्वर की जय!' प्रेमचंद कहानी में निष्पक्ष न्याय की सच्ची अवधारण स्थापित करने में सफल होते हैं।

मुख्य आलेख :

महात्मा गांधी की मान्यता थी कि भारत की आत्मा गांव में निवास करती है। गांधी की इसी मान्यता के अनुरूप प्रेमचंद का विश्वास था कि ग्राम-जीवन की उन्नति में ही देश की सच्ची उन्नति निहित है। प्रेमचंद ने अपने कथा-साहित्य में ग्राम-जीवन में व्यक्ति के दुःख, उत्पीड़न, आपसी वैमनस्यता, स्वार्थ, संघर्ष, न्याय के लिए लड़ने की जिजीविषा जैसे मानवीय गुण और दोषों का चित्रण किया है। प्रेमचंद की कहानियों को पढ़ते हुए भारत का संपूर्ण ग्राम-जीवन स्मृति पटल पर चित्रित हो जाता है।

हिंदी कथा-साहित्य में मनोवैज्ञानिक कथानकों का सूत्रपात प्रेमचंद की आरंभिक कहानी 'पंच-परमेश्वर' से होता है। 'सरस्वती' पत्रिका में जून 1916 में प्रकाशित कहानी 'पंच-परमेश्वर' के माध्यम से प्रेमचंद ने कथा साहित्य-जगत में दस्तक दी थी कि प्रेमचंद ग्रामीण परिवेश में मानव-जीवन के विभिन्न पहलुओं को अपनी कथावस्तु बनायेंगे।

प्रेमचंद की कहानी 'पंच-परमेश्वर' दायित्वबोध, न्याय और अन्याय की कहानी है। खाला जुम्मन को अपना समझकर बुढ़ापे में उस के नाम अपनी मिल्कियत लिख देती है। जुम्मन इस अवसर पर लंबे-चौड़े वायदे करता है। खाला विश्वास कर लेती है। विश्वास न करती, तो क्या करती? अन्य कोई चारा भी तो न था। मिल्कियत लिखे जाने तक तो खाला पर हलवे-पुलाव की वर्षा की गयी, किंतु रजिस्ट्री पर मुहर लगते ही खाला की खातिरदारी पर भी जैसे मुहर लग गयी। रोटियों के साथ तीखा सालन और बातों में कड़वाहट घुलने लगी। जुम्मन भी निष्ठुर हो गया- "बुढ़िया न जाने कब तक जियेगी। दो-तीन बीघा ऊसर क्या दे दिया, मानो मोल लिया है। बघारी दाल के बिना रोटियां नहीं उतरतीं। जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक गांव मोल ले लेते।" 1

इंसान सब कुछ सहन कर लेता है, किंतु निष्ठुरतापूर्वक किये गये अपमान पर तिलमिला उठता है। खाला की बर्दाश्त करने की सीमा चुक गयी। जुम्मन से अपने लिए रुपये बांधने की गुहार लगायी। टका-सा जबाव मिलने पर पंचायत करने की धमकी दी। जुम्मन को इस बात का घमंड था कि उसके खिलाफ फैसला भला कौन करेगा? पंचायत में फरिश्ते तो आते नहीं। खाला दर-दर भटकी। किसी ने

तरस खाया तो किसी ने हिकारत की नजरों से देखा। खाला पहुंची अलगू चौधरी के पास। अलगू चौधरी ने पंचायत में आने के लिए झिझकते हुए हामी तो भारी, किंतु ऐसा भी कहा कि वह पंचायत में मुंह नहीं खोलेंगे। पंच बनने से अलगू चौधरी झिझकते रहे। हां कैसे करते? जुम्मन अलगू चौधरी के परम मित्र जो थे। खाला यहां नीतिशास्त्र का एक सिद्धांत अलगू चौधरी के सामने रखते हुए कहती है "बेटा क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?"2

खाला के मुख से निकली इस ललकार ने अलगू चौधरी के माथे पर जैसे ठक-ठक कर दी हो। ललकार व्यक्ति को सचेत कर देती है। फिर वह अजेय बन जाता है। खाला के शब्द अलगू चौधरी के हृदय में गूंजने लगे। खाला के मुंह से निकला यह नीति वाक्य कहानी 'पंच-परमेश्वर' का जैसे बीज वाक्य बन जाता है। अलगू चौधरी की आत्मा जागृत हो गयी। खाला द्वारा कहा गया वाक्य अलगू चौधरी के हृदय में गुंजायमान होने लगा- क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?

पंचायत हुई और पंच बने अलगू चौधरी। इधर खाला ईमान और पंच के न्याय के भरोसे और उधर जुम्मन अलगू के साथ अपनी गाढ़ी मित्रता को लेकर निश्चिंत। खाला ने पंचों से साफ कह दिया "तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह पर चलूं। अगर मुझ में कोई ऐब देखो, तो मेरे मुंह पर थप्पड़ मारो। जुम्मन में बुराई देखो, तो उसे समझाओ। क्यों एक बेकस की आह लेता है। मैं पंचों का हुक्म सिर-माथे पर चढ़ाऊंगी।"3

कहानी में खाला का पंचायत व्यवस्था पर अटूट विश्वास झलकता है। आखिर झलके भी क्यों न, जब अपना सगा ही दगा देने लगे तो, पंचायत पर भरोसा करना ही पड़ेगा। खाला ने पंचायत से कह दिया "पंच के दिल में खुदा बसता है। पंचों के मुंह से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ से निकलती है।"4

जिरह के पश्चात आयी फैसले की घड़ी और पंच बने अलगू चौधरी का फैसला रहा खाला के पक्ष में। खाला को माहवार खर्च देने का फैसला सुनाया गया और ऐसा न होने पर जमीन का हिब्बानामा रद्द माना जायेगा, ऐसा घोषित किया गया।

फैसला सुनकर जुम्मन शेख सन्न रह गया और वह मन ही मन अब तक के अपने मित्र अलगू चौधरी को कोसने लगा, किंतु वहां उपस्थित शेष सभी जन फैसले की प्रशंसा करने लगे। लोग कह उठे "इसका नाम पंचायत है! दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। दोस्ती, दोस्ती की जगह है, किंतु धर्म का पालन करना मुख्य है। ऐसे ही सत्यवादियों के बल पर पृथ्वी थमी है, नहीं तो कब की रसातल को चली जाती।"5

इस फैसले के पश्चात अलगू चौधरी और जुम्मन में ऐसी वैमनस्यता पनपी कि वे एक-दूसरे के दुश्मन बन बैठे।

ग्रामीण जीवन जितना शांत और सरल रहा है, उतना ही घटना प्रधान भी। शीघ्र ही एक ऐसी घटना गांव में हुई कि इस बार अलगू चौधरी को अपने एक मामले में पंचायत बुलानी पड़ी। अलगू चौधरी ने अपना बचा हुआ एक स्वस्थ बैल समझू साहू को बेच दिया, वह भी एक महीने की उधारी पर। समझू साहू ने हट्टा-कट्टा बैल पाकर उससे रात-दिन काम लिया और बदले में उसे सूखा भूसा खिलाया। एक बार रात के समय माल लाद कर वापस हो रहा था कि मरगिल्ला-सा हो चुका बैल सड़क पर ही दम तोड़ गया। रात वहीं सड़क पर काटनी पड़ी। इसी क्रम में अंटी की रकम और गाड़ी में बचा हुआ माल किसी ने पार कर दिया। साहू पर चौतरफा मार पड़ी।

उधर अलगू चौधरी अपनी उधारी का तगादा कर बैठे। समझू साहू ने बैल की तय की गयी कीमत देने से साफ इंकार कर दिया और अलगू चौधरी पर आरोप लगाया कि उन्होंने बैल पहले से ही कमजोर दिया था इसलिए वह मर गया। ग्राम-समाज में आपसी विवाद यदि बातों से नहीं सुलझता, तो लाठी तन जाने में भी देर नहीं लगती। हाथापाई हो जाना, तो सामान्य चलन बन जाता है ऐसे मौके पर। अलगू चौधरी बैल की कीमत के डेढ़ सौ रुपये को कम रकम नहीं मानते थे। यहां भी हाथापाई की नौबत आ पहुंची। हर एक गांव में भलेमानसा लोग होते ही हैं। ऐसे ही भलेमानस लोगों के समझाने पर मामले के हल के लिए पंचायत बुलाने का फैसला लिया गया। समझू साहू को पंच चुनने का अधिकार दिया गया और पंच बने जुम्मन शेख, अलगू चौधरी के पक्के दुश्मन। अलगू चौधरी का मन जैसे बुझ गया।

प्रेमचंद इस कहानी में मनोविज्ञान के सच्चे पारखी बन जाते हैं। किन परिस्थितियों में मनुष्य के मन में क्या घटित होता रहता है, प्रेमचंद ने उसे बखूबी पकड़ा है और कहानी ग्राम-समाज की तस्वीर बनाकर पाठक के समक्ष आ जाती है।

प्रेमचंद इस अवसर पर मानव-जीवन के सिद्धांत की बात करते हैं "अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुदा हमारे संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है। जब हम राह भूल कर भटकने लगते हैं, तब यही ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक बन जाता है।" 6

प्रेमचंद ने कहानी में अपनी उपर्युक्त बात के समर्थन में एक नवयुवक का उदाहरण दिया है। किसी परिवार में कोई उदंड नवयुवक है। माता-पिता उसे कुल-कलंक मानने लगते हैं और अपने पुत्र के भविष्य और कुल की मर्यादा की रक्षा के प्रति चिंतित होते हैं, किंतु उसी उद्दंड नवयुवक के सिर पर गृहस्थी का बोझ पड़ते ही वह उन्मत्त युवक धैर्यशील और शांतचित्त बन जाता है। उत्तरदायित्व व्यक्ति को गंभीर बना देता है।

पंच बनते ही जुम्मन के साथ ऐसा ही हुआ। वह मन ही मन विचार करने लगा "मैं इस वक्त न्याय और धर्म के सर्वोच्च आसन पर बैठा हूं। मेरे मुंह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के

सदृश है और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मुझे सत्य से जौ भर भी टलना उचित नहीं।" 7

पंचायत में सवाल-जवाब हुए। दोनों पक्षों की बात पंच देवता ने सुनी। अंततः पंच बने जुम्मन ने फैसला अलगू चौधरी के पक्ष में सुनाया। फैसला सुनकर चौधरी फूले न समाये और पंचायत में उपस्थित सभी जन एक सुर में बोल उठे- पंच परमेश्वर की जय। इन सुरों में एक सुर अलगू चौधरी का भी था। जुम्मन अलगू चौधरी के गले लगते हुए बोले "आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की जबान से खुदा बोलता है।" 8

कहानी के दो प्रमुख पात्र अलगू चौधरी और जुम्मन शेख जब तक साधारणव्यक्ति हैं, तब तक उनमें बेईमानी, ईर्ष्या, वैमनस्यता जैसे मानवीय दोष हैं। जैसे ही वे अपनी अपनी बारी आने पर पंच के पद पर बैठते हैं, वैसे ही उनके हृदय पर नैतिकता और दायित्व जैसे गुण हावी हो जाते हैं। उनमें दैवीय गुण समाहित हो जाते हैं। वे न्याय के देवता बन जाते हैं। कहानी में दोनों बार पंचों का फैसला दोनों पक्षों को सहर्ष स्वीकार होता है और पंचायत में आये हुए लोग भी फैसले की सराहना करने लगते हैं।

प्रेमचंद की यह कहानी 1916 में प्रकाश में आयी अर्थात आज से लगभग एक शताब्दी से भी पूर्व। प्रेमचंद इस कहानी में महिला सशक्तिकरण की धारणा के हिमायती होकर उभरे हैं। जुम्मन शेख की खाला वृद्ध है, अनपढ़ है, असहाय है, नाम मात्र की दो-तीन बीघा जमीन उसके पास है। वही उसके बुढ़ापे का सहारा है। जिसे वह अपना मानकर जमीन की मिल्कियत उसके नाम कर देती है, वही जुम्मन उसके प्रति निर्मोही बन जाता है।

वह दर-दर जाकर अपनी बात कहती है। कोई कहता कि कब्र में पांव लटके हैं, पर हवस नहीं मानती, कोई कहता- रोटी खाओ और अल्लाह का नाम लो, कोई उसकी हंसी उड़ाता है। वह हार नहीं मानती और पंचायत बुलाने का फैसला करती है। वह जानती है कि वह कमजोर है। वह यह भी जानती है कि जुम्मन शेख की गांव में मजबूत स्थित है, किंतु वह अपने अधिकार के लिए लड़ना जानती है। उसे समाज की व्यवस्था पर भरोसा है। उसे पंचायत व्यवस्था पर भरोसा है। खाला को पंच देवता पर दृढ़ विश्वास है। वह पंच भी बनाती है, तो जुम्मन के गाढ़े मित्र अलगू चौधरी को। न्याय पर खाला को पूरा विश्वास है।

प्रेमचंद स्वयं मानते थे कि मनोवैज्ञानिक सत्य पर आधारित कहानी ही सर्वोत्तम कहानी होती है। इस मायने में कहानी 'पंच -परमेश्वर' प्रेमचंद की सर्वोत्तम कहानियों में से एक है। इस कहानी में मानव-मन के रहस्यों को खोलने का प्रयास किया गया है। मनुष्य के भीतर अच्छाइयां और बुराइयां दोनों ही समाहित हैं। प्रेमचंद ने कहानी में बुराई पर अच्छाई की जीत को स्थापित किया है।

प्रेमचंद की कहानियों में ग्राम-जीवन अपनी समस्त अच्छाइयों और बुराइयों के साथ यथार्थ रूप में चित्रित हुआ है। प्रेमचंद को आदर्श की स्थापना करने वाला कथाकार माना गया है। प्रेमचंद का मानना था कि यथार्थ चित्रण करना कलाकार का काम नहीं। इस संबंध में प्रेमचंद कहते हैं "अगर हम यथार्थ को हू-ब-हू खींच कर रख दें, तो उसमें कला कहां है। कला केवल यथार्थ की नकल का नाम नहीं है। कला दीखती तो यथार्थ है पर यथार्थ होती नहीं।" 9

कहानी 'पंच-परमेश्वर' में भी प्रेमचंद मनोविज्ञान का सहारा लेकर कहानी के पात्रों के मन के कोने-कोने में झांक आते हैं और ऐसी परिस्थितियां पैदा करते हैं कि कहानी के पात्र अपनी बुराइयों पर विजय प्राप्त करते हैं और अंतत जीत अच्छाई की होती है। प्रेमचंद अपनी साहित्यिक मान्यताओं के अनुरूप कहानी में आदर्श न्याय की स्थापना करने में सफल होते हैं। डॉ. रामचंद्र तिवारी का मानना है-

"प्रेमचंद सुधारवादी युग के कलाकार थे।

उनकी कृतियों में अंत तक आदर्शवाद के प्रति मोह बना रहा। यथार्थ समस्याओं को लेकर भी उनका समाधान वे आदर्शवादी ढंग से ही करते हैं।" 10

निष्कर्ष

कहानी 'पंच-परमेश्वर' ग्रामीण जीवन में व्याप्त प्रपंचों, मित्रता, छल-कपट, भाईचारा, न्याय, अन्याय, झूठ और बेईमानी के कुचक्र की कहानी है। कहानी की केंद्रीय पात्र जुम्मन की खाला के माध्यम से प्रेमचंद ने हिंदी कहानी-साहित्य में पहली बार महिला सशक्तिकरण की अवधारणा प्रस्तुत की है। प्रेमचंद ग्रामवासियों के जीवन-व्यवहार की अच्छाइयों, बुराइयों के बीच से सागर मंथन की तरह अमृत निकालकर लाये हैं और यह भी स्थापित किया है कि मनुष्य के भीतर निहित दैवीय गुण और उनके अनुरूप जीवन व्यवहार ही जीवन की आदर्श स्थिति है। प्रेमचंद अपनी कहानी 'पंच-परमेश्वर' के माध्यम से गांव के साधारण व्यक्तियों का हृदय परिवर्तित करने में सफल होते हैं। पंच बनते ही अलगू चौधरी और जुम्मन दुश्मनी और अन्य बुराइयों पर विजय प्राप्त कर लेते हैं और पक्षपातरहित न्याय प्रदान करते हैं। साधारण-सी वृद्धा खाला को पंचों पर पूरा भरोसा है। वह निडर होकर अपने सगे भतीजे जुम्मन के अन्यायपूर्ण व्यवहार से तंग आकर पंचायत बुलाने का फैसला करती है और अंतत उसे न्याय मिलता भी है।

संदर्भ

[1]. प्रेमचंद, पंच-परमेश्वर, मानसरोवर (भाग 7), सुमित्र प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2017, पृष्ठ संख्या 93
[2]. वही--पृष्ठ संख्या 94

[3]. वही- पृष्ठ संख्या 94, 95
[4]. वही - पृष्ठ संख्या 95
[5]. वही - पृष्ठ संख्या 96
[6]. वही - पृष्ठ संख्या 99
[7]. वही - पृष्ठ संख्या 99
[8]. वही - पृष्ठ संख्या 100
[9]. मधुरेश, हिंदी कहानी का विकास, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद, नवम संस्करण 2019, पृष्ठ संख्या 27
[10]. डॉ. रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य-साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, दशम् संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या 371